॥ श्री ॥

न्यायकुमुदचन्द्र

NYAAYAKUMUDACHANDRA

प्रभाचन्द्र · ११वीं शती · अभिलेख ५९/९०

श्री लोकचन्द्राचार्य → **प्रभाचन्द्र** → श्री नेमिचन्द्राचार्य-1

संक्षिप्त परिचय

आचार्य प्रभाचन्द्र कृत — अकलंकदेव के लघीयस्त्रय पर बृहत् संस्कृत टीका; जैन न्याय का विश्वकोशीय ग्रन्थ, जिसमें समकालीन सभी दर्शनों से संवाद है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

न्यायकुमुदचन्द्र — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ५९ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता प्रभाचन्द्र; रचना-काल ११वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ९२) के अनुसार इनका समय ५३१–५५६ है तथा गुरु श्री लोकचन्द्राचार्य। इसी लेखनी से प्रमेयकमलमार्तण्ड भी इस सूची में सम्मिलित है। समकालीन ग्रन्थों में धर्मपरीक्षा, श्रावकाचार, सुभाषितरत्नसंदोह, वर्धमानचरित, पार्श्वनाथचरित, परीक्षामुख परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

प्रमेयकमलमार्तण्ड

समकालीन ग्रन्थ

धर्मपरीक्षा · श्रावकाचार · सुभाषितरत्नसंदोह · वर्धमानचरित · पार्श्वनाथचरित · परीक्षामुख

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ५९ — मूल छायाचित्र

← पार्श्वनाथचरित

प्रमेयकमलमार्तण्ड →